



पड़ोस के लड़के ने चोद कर पूरा मजा दिया

“देसी भाबी Xx चुदाई का मजा दिया पड़ोस के शादीशुदा लड़के ने. वह मुझे पटाने की कोशिश कर रहा था और मैं उसे रोकती नहीं थी. एक दिन उसने मुझे बिना किसी तैयारी के मुझे पेल दिया. ...”

Story By: सना साहिल (sanasahilcpl)

Posted: Wednesday, December 25th, 2024

Categories: [पड़ोसी](#)

Online version: [पड़ोस के लड़के ने चोद कर पूरा मजा दिया](#)

पड़ोस के लड़के ने चोद कर पूरा मजा दिया

देसी भाबी Xx चुदाई का मजा दिया पड़ोस के शादीशुदा लड़के ने. वह मुझे पटाने की कोशिश कर रहा था और मैं उसे रोकती नहीं थी. एक दिन उसने मुझे बिना किसी तैयारी के मुझे पेल दिया.

यह कहानी सुनें.

desi-bhabhi-xx-chudai

मेरा नाम सना है. मैं 32 साल की शादीशुदा लड़की हूँ।

मैं जौनपुर में रहती हूँ.

मेरे पति अक्सर अपने व्यवसाय को लेकर बाहर की यात्रा पर रहते हैं।

मेरा मुहल्ला बहुत अच्छा है, सब एक-दूसरे से मिलकर रहते हैं।

मेरे बगल में एक यादव परिवार ने मकान बनवाया जिसमें पति-पत्नी और दो बच्चे हैं।

पति का नाम महेश है और उसके लड़के का नाम अंकुर है।

उसकी उम्र 27-28 साल की होगी.

उनकी पत्नी मेरे यहां आती है और मैं उनके यहां जाती हूँ।

जब मैं उनके यहां जाती तो महेश अक्सर मेरे करीब आकर हंसी मजाक कर देता था.

मैं भी मजाक जान उसे इग्नोर कर देती थी।

वह शायद देसी भाबी Xx चुदाई का मजा लेना चाह रहा था.

अब धीरे धीरे उसकी हिम्मत बढ़ने लगी और वह मौका देख अनजान बन कभी मेरे बूब्स को दबा देता, कभी गाल पर चिकोटी काट लेता था।

एक दिन की बात है, मैं सुबह के समय अपने लान की सफाई कर रही थी.

कि वह मेरे घर की बाउंड्री के पास आया और मुझसे मजाक में कहा- भाभी, भैया तो अक्सर बाहर रहते हैं.

तो मैंने कहा- रहते हैं. तो आप से क्या मतलब ?

वह फिर हंसकर कहा- वे आप को खुश कर पाते हैं या नहीं।

तब मैंने कहा- वे नहीं खुश करते तो आप खुश करते हो क्या ?

तब वह पुनः हंस कर बोला- आप कहें तो खुश कर दूँ ?

मैं उसकी बात अनसुनी कर घर में चली आई।

पर मैं उसकी बात का मतलब समझ गयी थी, मेरे मन में भी उसके लिए वैसे ही भाव पनपने लगे थे.

इस घटना के एक हफ्ते बाद मेरे मुहल्ले में एक लड़की की शादी थी.

हम सभी मुहल्ले के लोग आमन्त्रित थे।

शादी मुहल्ले के बगल मैरिज लान में थी.

वहां पर केवल द्वारपूजा और जयमाला का कार्यक्रम था, शादी घर से ही थी।

महेश भी सपरिवार शादी में गया था।

वह वहां भी बार बार मेरे आगे पीछे मंडरा रहा था।

जयमाला के बाद खाना वह मेरे बगल में ही खाना खा रहा था।

उसके बाद जब हम सब चलने लगे.

तब मेरे बच्चे और महेश की पत्नी और बच्चे आगे आगे चल रहे थे.

मैं जरा धीरे धीरे चल रही थी.

महेश भी मेरे साथ चलने लगा, उसने मुझसे कहा- भाभी जी, आप रात में शादी देखने जायेंगी ?

तब मैंने कहा- हां जी !

उसने कहा- अंकुर की मम्मी भी कह रही थी जाने को !

तब मैंने कहा- ठीक तो है.

उसने कहा- जब अंकुर की मम्मी वहां पहुंचे, तब आप पांच मिनट के लिए बाहर आइएगा.

तब मैंने कहा- ठीक है ।

मुझे लगा कि वह कुछ ऐसी वैसी बात ही करेगा जिसके लिए मैं तैयार भी थी.

यह बात करते करते हम घर आ गये ।

घर पहुंच कर मैंने बच्चों को सुलाकर कपड़े बदले और शादी देखने पहुंची.

मेरे पहुंचने के बीस मिनट बाद महेश की पत्नी भी पहुंची और वह मेरे बगल में बैठकर शादी देखने लगी ।

दो तीन मिनट बाद मैं बाहर निकली तो देखा महेश मेरे गेट के पास लुंगी और बनियान में खड़ा था ।

मैंने अपने मेन गेट का दरवाजा जैसे खोलना चाहा, वैसे उसने मेरे हाथ को पकड़ लिया और मुझे अपने घर की ओर लेकर चलने लगा.

सड़क पर लाइट और जनरेटर वाले थे इसलिए मैं जोर से नहीं बोली.

मैंने धीरे से कहा- अंकुर के पापा, यह क्या है ?

तब उसने कहा- कुछ नहीं भाभी, बस पांच मिनट आप से बात करनी है।

मैं चुपचाप उसके साथ चली आई.

अपने घर के बरामदे में पहुंच कर उसने पहले बरामदे के चैनल को खींचा फिर पर्दे को खींच मेरे हाथ में अपनी लुंगी हटा खड़े लंड को पकड़ा दिया.

मैं अचम्भित रह गई।

मैंने तुरंत हाथ खींच लिया।

तब उसने मुझे अपनी बाहों में भर लिया और मेरे मुंह में अपना मुंह डाल किस करने लगा। अब मैं कुछ नहीं कह पा रही थी।

मुझे अपनी सहेली (चूत) के पास कुछ मोटा लोहे की रॉड जैसा चुभने लगा।

उसने मुझे उसी तरह पास पड़े तख्ते पर लिटा दिया और मेरी साड़ी पेटिकोट सहित उठा दिया और अपना आठ इंच लंबा लंड एक झटके में मेरी चूत में डाल दिया.

मेरी आंखों से आंसू निकल आए और मैं उससे कहती रही- अंकुर के पापा, यह क्या कर रहे हैं ?

तब वह कहता- भाभी आप को बहुत मज़ा देंगे।

मुझे मजा आ भी रहा था.

अब वह तेज तेज चोदने लगा और जिसकी ठोकर मेरी बच्चेदानी तक लग रही थी.

करीब बीस मिनट जोरदार चोदने के बाद उसने अपना गर्म गर्म बीज मेरे बच्चेदानी पर उड़ेल दिया।

इस तरह मुझे मेरे पड़ोसी ने बिना किसी फोरप्ले के फटाफट चोद दिया था।

उसके बाद मैं तुरंत उठी और साड़ी ठीक कर शादी देखने पहुंची।

मेरी चूत के द्वार के ऊपर बहुत जलन हो रही थी।

आधे घंटे तक शादी देखने के बाद मैं अपने घर आ गयी।

दूसरे दिन मुझे पूरे दिन ह्रारत यानि बुखार की फीलिंग रही और चूत में जलन! दोपहर तक मैं सोती रही।

लगभग 11:30 बजे जब मैं सोकर उठ गई तो बुखार के साथ मेरा बदन भी दर्द कर रहा था।

फ्रेश होने के बाद जब मैं नहाने गई तो काफी देर तक गर्म पानी की फुहारें अपनी चूत पर मारी जिससे कुछ आराम मिला।

जब दोपहर को हम खाना खाने बैठे तो मेरे पति ने पूछा- संजना, तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?

मैंने हां कर दिया और कहा- कल रात शादी में जाने के कारण कुछ ह्रारत जैसी है।

तब उन्होंने डिस्पिन लाकर मुझे दी और कहा- खा लो, आराम मिलेगा।

मैंने दवा खा ली, फिर जाकर लेट गई।

जैसे ही मैंने आंखें बंद की, वैसे ही महेश का मोटा और लम्बा लंड मेरे आंखों के सामने आने लगा और मेरी चूत में अजीब सा दर्द और गुदगुदी होने लगी।

यह सोचते सोचते मैं सो गयी।

शाम को जब मैं उठी तब मेरा शरीर कुछ हल्का सा लगा।

पति ने पूछा- कैसी तबीयत है अब ?

मैंने कहा- ठीक हूं !

उसके बाद पति ने कहा- खाना मत बनाइएगा, हम बाहर खाकर आयेंगे.

मैंने भी हां कर दी।

उस दिन हम रात का खाना बाहर होटल में खाकर आये और आकर सो गए.

क्योंकि मेरे पति को बाहर जाना था सुबह ही !

अगले दिन भोर में ही मैं उठ गई और फ्रेश होकर नाश्ता तैयार किया.

तब तक मेरे पति भी तैयार हो गए थे.

उन्होंने नाश्ता पैक करने को कहा क्योंकि उनकी रेलगाड़ी का समय हो गया था।

पति के जाने के बाद बाहर लॉन में जब मैं झाड़ू लगा रही थी, तब महेश आया और बाउंड्री

के पार से मुझसे धीरे से कहा- भाभी, उस दिन आपको अधूरे में छोड़ दिया था, आज आ

जाइएगा, पूरा मजा देंगे !

और उसने कहा- बच्चों को और अंकुर मम्मी को हम डेरी पर छोड़ आएंगे.

घर से कुछ दूर ही उसकी एक डेयरी थी जहां कभी-कभी उसकी बीवी बच्चों के साथ रात

को रुक जाती थी.

मैंने कहा- ठीक है।

उसके बाद जब मैं नहाने गई तो सबसे पहले मैंने अपनी झांटों को क्लीन शेव किया, फिर

काखों के बालों को !

सुबह जब से महेश ने घर आने को कहा था, तबसे मैं बहुत उतावली हो रही थी कि जल्दी

से रात हो और मैं महेश की बाहों में पूरी रात रहूं।

खैर धीरे धीरे रात हुई मैंने अपने बच्चों को जल्दी से खिला कर सुला दिया और अपने भी सोने का नाटक किया.

जाड़े के दिन थे, उस दिन कोहरा भी कुछ ज्यादा पड़ रहा था.

कुछ देर बाद मैंने देखा कि मेरे बच्चे सो गए थे.

रात के करीब 10:00 बजे थे.

मैं गुलाबी रंग की साड़ी और लाके रंग का ब्लाउज पहन कर, हल्की सी लिपस्टिक लगाकर, शाल ओढ़ कर महेश के पास पहुंची.

वह अपने गेट पर मेरा इंतजार कर रहा था.

उसने लोवर और जैकेट डाल रखी थी.

जैसे ही मैं पहुंची, उसने मुझे खींच लिया और तुरंत गेट बंद कर मुझे अन्दर कमरे में ले जाकर उसके दरवाजे भी बंद कर दिया.

मेरी आँखों में देख वह मेरे ओंठों में ओंठ डाल कर जीभ से जीभ लड़ाते हुए मेरी चूचियों को दबाने लगा और दूसरे हाथ से मेरी चूत को साड़ी के ऊपर से सहलाने लगा।

मैं भी उसके लन्ड को लोवर के ऊपर से सहलाने लगी.

वह उस दिन की तरह लोहे की रॉड जैसा चुभने लगा था।

मेरे ओंठ चूसते हुए महेश ने पहले मेरी शाल को हटाया, फिर उसने मेरी साड़ी मेरे बदन से अलग कर दिया.

मैंने भी उसके जैकेट को उतार दिया.

फिर जैसे मैंने उसके लोवर को सरकाया तो देखा उसने अन्डरवियर नहीं पहनी हुई है और

उसका लंड पहले से ज्यादा मोटा और लम्बा हो गया है।

अब वह पूरा नंगा हो गया था और मैं ब्लाउज और पेटीकोट में थी।

वह अब और उतावला हो गया था.

मैं भी उसके लंड को हाथ में लेकर धीरे धीरे आगे पीछे सहला रही थी।

अब उसने मेरी ब्लाउज और ब्रा को उतार दिया.

फिर उसने तेजी से पेटीकोट का नाड़ा खोला.

मेरी चिकनी बुर को देख उसने मुझे अपनी बाहों में भर लिया और एक बार पुनः मेरे माथे पर किस किया.

फिर ओंठ पर, फिर गर्दन पर, फिर नाभि पर!

फिर जैसे ही उसके ओंठ मेरी चूत पर टिके, वैसे ही मेरे शरीर में चींटियां सी दौड़ गईं।

मैं भी उसके बालों को सहलाने लगी.

कुछ देर मेरी चूत चूसने के बाद उसने मुझे अपने बेड पर बैठा दिया.

वह मेरे सामने आकर बैठ गया और कहा- भाभी, अपने पैरों को फैलाओ बैठे-बैठे!

जब मैंने अपने पैरों को फैलाया तो मेरी भीगी चूत और सेक्सी लग रही थी.

उसने भी अपने दोनों पैरों को फैलाया और अपने लन्ड को हाथ में लेकर मेरी चूत पर रगड़ने लगा.

तब मेरी बुर में जैसे आग लग गई हो.

मैं उसके कमर में अपने दोनों पैर को फंसाकर आगे बढ़ी.

तो उसने भी अपने पैरों को मेरे कमर में फंसाकर अपनी ओर मुझे खींचा.

उसका लंड जैसे ही मेरी चूत में पूरा घुसा, वह अपने ओंठ से मेरे ओंठ चूसने लगा.

महेश का पूरा लण्ड मेरी बच्चेदानी तक ठोकर मार रहा था।
मैं भी उसके गोदी में बैठ कर उछल उछल कर चुद रही थी।

करीब पंद्रह मिनट इस तरह चुदने के बाद मैंने उसे धक्का देते हुए लिटा दिया और उससे कहा- अब मैं आपको ऊपर से चोदूंगी।

इतना कह मैं उसके लम्बे लंड पर बैठ अच्छी तरह से रगड़ रगड़ कर चुदने लगी।

जब मैं अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचने वाली थी, तब मैंने उसे कसकर पकड़ कर कहा- अंकुर के पापा, मैं झरने वाली हूँ!

और यह कह मैंने उसके लंड पर बैठकर ऊपर से दबाते हुए बच्चेदानी तक घुसेड़ लिया।
मैं उसके ऊपर निढाल सी पड़ गई।

कुछ देर लेटने के बाद उसने मुझे सहलाते हुए कहा- भाभी जरा बकैइया हो जाओ।
मैं उसके बेड पर ही बकैइया बन गयी।

पीछे से आकर उसने एक झटके में ही अपने लंड को मेरे बच्चेदानी तक पहुंचा दिया।
फिर वह तेज़ रफ़्तार में डॉगी स्टाइल में चोदने लगा और मुझसे पूछने लगा- भाभी, कैसा लग रहा है ?

तो मैं भी कहारती हुई बोली- अंकुर के पापा, बहुत मज़ा दे रहे हैं आप!

इस तरह दस मिनट तक उसने तेज धक्के लगा मुझे चोदा।
मैं दूसरी बार भी झर गयी।

मैंने कहा- अब बस करो अंकुर के पापा!

तो उसने कहा- भाभी, अभी मैं झरा नहीं!

फिर उसने मुझे सीधा लिटा दिया और मेरी चूचियों को अपने मुंह में डाल धीरे धीरे मुझे

चोदने लगा.

मेरी कमर के नीचे तकिया लगा होने के कारण उसका लंड बार-बार टोकर मारकर मेरे बच्चेदानी का मुंह खोल देता था।

अब तो जैसे राजधानी एक्सप्रेस चलती है, वह वैसे तेज़ तेज़ चोदने लगा.

देसी भाबी Xx चुदाई में मेरे मुंह से निकल रहा था- अंकुर के पापा ... अब बस करो ... बस करो!

और वह बुरी तरह से चोद रहा था और कह रहा था- भाभी, इतना मजा अंकुर मम्मी नहीं देती है!

पन्द्रह मिनट तेज़ चोदने के बाद उसने कहा- भाभी, मैं झरने वाला हूं, कहां गिराऊँ?

तब मैंने कहा- अन्दर ही झाड़ दो अंकुर के पापा!

और तेज़ झटके मार मार कर उसने मेरी बच्चेदानी के मुंह पर अपनी सारी मलाई उड़ेल दी.

मैं बहुत खुश थी कि एक बार की चुदवाई में पहली बार मैं तीन बार झड़ी.

और चोदने वाला एक बार!

उसके बाद वह नंगे ही मुझे लेकर रजाई में लेट गया और मुझे अपनी बांहों में चिपका कर पूछा- कैसा लगा?

तब मैंने कहा- सच बोलूं, अंकुर के पापा ... शादी भले ही तुम्हारे भैया से हुई हो लेकिन सुहागरात का असली मजा आपने दिया. अब आप मुझे कभी प्यासी नहीं छोड़ोगे न?

तब उसने कहा- नहीं भाभी!

इस तरह बात करते करते उसका मोटा लोहे जैसा सख्त लंड फिर खड़ा हो गया और वह पुनः मेरे ऊपर आकर बुरी तरह आधे घंटे चोदने के बाद मेरी चूत में ही झड़ गया.

और मैं भी उसके साथ झड़ी.

फिर वह अपना लंड निकाल कर मेरे मुंह में लगाने लगा और कहा- भाभी, यह मलाई साफ करो!

पहले तो मुझे घिन आयी लेकिन जब उसने जबरन मुंह में छुआ दिया.

तो मैं पहले थोड़ा सा मुंह खोल कर साफ किया फिर उसका नमकीन स्वाद अच्छा लगा. तब मैंने सारे लंड को चाट चाट कर साफ़ कर दिया.

उसके बाद मैं कपड़े पहनकर जल्दी से अपने घर आ गयी.

वास्तव में उस रात की चुदाई मैं जिन्दगी भर नहीं भूलूंगी।

देसी भाबी Xx चुदाई कहानी पर अपनी राय कमेंट्स और मेल में बताएं.

sanasahilcpl20011997@gmail.com

Other stories you may be interested in

दोस्तों ने एक दूसरे की माँ चोदी

ग्रुप ऑर्गी सेक्स कहानी में मेरे बेटे ने मुझे और अपनी बहन को चोदने के बाद दोस्तों और उनकी मम्मियों के साथ एक चुदाई पार्टी का आयोजन किया जिसमें 4 लड़के, 4 मम्मियां और एक बहन थे. यह कहानी सुनें. [...]

[Full Story >>>](#)

लाइव सेक्स शो का आनन्द- 2

Xxx लाइव पोर्न शो कहानी में चार दोस्तों ने अपनी पत्नियों के साथ सेक्स करके सबको दिखाया. एक जोड़े ने कमरे में सेक्स किया, बाकी सबने देखा. आप भी मजा लीजिये. दोस्तो, मैं आप सबका दोस्त रतन दत्त एक बार [...]

[Full Story >>>](#)

भाई बहन की चुदाई में माँ की एन्ट्री

बहेनचोद ब्रो सेक्स कहानी में मैं जवान बेवा हूँ. मेरे जवान बेटा बेटा हैं. एक रातमें जगी तो मैंने देखा कि मेरी दोनों औलादें आपस में चुदाई करने में लगी हैं. यह कहानी सुनें. मेरा नाम मिसेज अमानी है। मैं [...]

[Full Story >>>](#)

लाइव सेक्स शो का आनन्द- 1

लाइव सेक्स शो स्टोरी में चार दोस्त और उनकी पत्नियां सामान्य सेक्स करके ऊब गए तो उन्होंने कुछ नया करने की सोची. बहुत कुछ करने के बाद उन्होंने लाइव सेक्स देखने दिखाने का तय किया. यह सच्ची सेक्स कहानी मेरे [...]

[Full Story >>>](#)

परी सी लड़की की चूत मेरी किस्मत में- 2

हॉट वर्जिन सेक्स विद नेक्स्ट डोर गर्ल का मजा मुझे मिला मेरे चाचा की बेटी की सहेली से। वह उनके पड़ोस में रहती थी। मैं चाचा के घर गया तो उससे नजर लड़ गई। फ्रेंड्स, मैं रोहित आपको अपने चाचा [...]

[Full Story >>>](#)

